International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
May- June- 2015, Volume-2, Issue-3
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

कवि त्रिलोचन शास्त्री का हिन्दी काव्य में योगदान

डॉ० शिवानी, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग ए0के0पी0 कॉलेज, खुर्जा, बुलन्दशहर

सारांश :

हर युग में रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज और रचनाओं को नई दिशा देने की भरपूर कोशिश की कई रचनाकारों व आचार्यो ने नदियों के किनारे की तरह निर्मल अविरल धारा की तरह शांत निर्मल अमर जीवनदायिनी रचनाओं का बोध किया। ऐसी ही सोच विचारधार के कवि त्रिलोचन शास्त्री जी हैं जिन्होने आधुनिक काल में प्रगतिशील चेतना को नई चकाचौध, कृत्रिमता से बिल्कुल अलग हटकर उसे एक अलग पहचान दी। कविताओं की पुष्टि के लिए उन्होने उसे ठोंक पीटकर इस कदर पकाया कि असलियत बयां करने में कोई शंका ना रह गई। हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील चेतना का विकास कोई सोची समझी रणनीति के तहत नही हुआ वरन् एक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हुआ प्रगतिशील चेतना का मुख्य उदेदश्य देशवासियों, पाठकों, श्रोताओं में राष्ट्रनुराग पैदा करने आर्थिक व समाजिक विषमता दूर करने गरीबों व किसानों का शोषण बन्द कराने के उद्देश्य से हुआ।

त्रिलोचना शास्त्री हिन्दी के महाप्राण कवियों में से एक थे। सरल व्यक्तित्व, सादगी भरा जीवन देसी संस्कार के बेबाक कवि त्रिलोचना प्रकृति प्रेमी, को जीने वाले कवि थे। आधुनिक हिन्दी कविता में अपनी दरिद्रता को हिला देने वाले फिर भी नियंत्रित और गरिमायुक्त कवि कवित्व में जीवन के खुरदरे यथार्थवादी पूरी रचनाओं का मिजाज स्थिरता और स्थिर चित वाला था। त्रिलोचना का काव्य संसार एक अंगूठी में लगे नगीने की तरह अपनी चमक बनाए हुए है। त्रिलोचन ने ना केवल हिन्दी भाषा के ही मर्मज है। वरना अन्य भाषाओं के गुण धर्मो के पारखी हैं, सॉनेट के सृजनकर्ता त्रिलोचना जी ही हैं। त्रिलोचन की रचना में प्रगतिशीलता का सानिध्य जनमुक्ति के एक जीवन्त प्रेरणा स्त्रोत के रूप में हुआ जो उनकी भावना को भारतीय के रूप में हुआ जो उनकी भावना को भारतीय यर्था के दृढ़ आधार पर स्थपित करती है।

शास्त्री जी की कविताएं अत्यन्त ही प्रेरणादायी है, उनके जीवन की दूरदर्शिता, लक्ष्य एंव मार्क्सवादी चिन्तन उन्नत की और बढावा देती हैं। त्रिलोचन की रचना धर्मिता का मुख्य विषय ग्रामीण जीवन की सोची महक है जिसका कलेवर निम्न व शोषित वर्ग है जहां हलधर बिना किसी बनावटी जिंदगी के रहते हुए कभी सूरज को अपना भाग्यविधाता मानता है तो कभी बादलों की आहट में अपनी किस्मत को खुलते देख नतमस्तक हो जाता है।

त्रिलोचन भारतीय लोकहित के सबसे बडे कवि है काव्य लिखना उनके लिए तप बराबर कार्य

हैं। जिसके लिए शास्त्री जी कोई भी जोखिम उठा सकते थे। उनकी साधारण लगने वाली कविताओं में जो काव्य दृष्टि है वह आज के काव्य परिदृश्य में एक उल्लेखनीय घटना मानी जाती है जिसका ठीक से पहचाना जाना हिन्दी काव्य लोचना परम्परा के लिए एक गहरी चुनौती है। हिन्दी काव्य में लोन धर्मिता और प्रगतिशील आधुनिकता का निर्वहन त्रिलोचन के अलावा कई अन्य कवियों ने भी किया जैसे – नागार्जुन, केदारनाथ, पर त्रिलोचन में लोक जीवन का जितना विस्तार और सघनता है उतनी किसी और कवि में नही। त्रिलोचन जी का काव्य संसार दुःखों के बीच लिख गया फिर भी अपने कर्तव्य पथ पर ये कभी भी धूमिल नही हुए। त्रिलोचन के अन्दर का कवि स्वीकारता तो है पीडा है पर उससे वह टूटा–हारा नहीं, हताश होकर बैठ नही गया। वह सदैव दुःखों की माला नही जपता वह कर्मयोगी है अपने कार्य में व्यस्त हो जाता है वह देव के भरोसे भी नही रहता बल्कि कर्म–पथ पर अग्रसर हो जाता है। त्रिलोचन जी मानते है कि –

''उस जनपद का कवि हूँ, कला हूं जो भूखा दूखा है, नंगा है अनजान है, कला–नही जानता,
कैसी होती है क्या है वह नही मानता कविता कुछ भी दे सकती है, कब सूखा है '' उसके जीवन का
सोता इतिहास ही बता,
सकता है, वह उदासीन अपने आपसे समाज से दुनिया को सपने से अलग नही मानता ''

सॉनेट के कर्त्ता के रूप में त्रिलोचन जी ने आंचलिकता के भावों को समझाने की जिम्मेदारी उन्होने स्वंय पर ली। त्रिलोचन जी प्रकृति के उपमानों के साथ रमें खूब जिया निहारा और पाठक कें समझ उसे आलेखित किया। उनके काव्य में ना तो आधुनिकता की सस्ती लोकप्रियता है और न ही कोई ओछापन। उनका काव्य जीवन का बोध और सच्चाई उजागार करता और जवीन शैली को प्रस्तुत करता है। त्रिलोचन की लेखनी ने शोषितों तिरस्कृत लोगों को दर्जा प्रदान किया। किसानों और मजदूरों से कवि बतियाते है उनकी पीड़ा महसूस करते। उनकी विवश्ता, छटपटाहट से वह रूबरू होता है। कवि की सम्पूर्ण काव्य लेखनी धरती, किसान, लोक, मजदूरी आदि को केन्द्र में रखकर की गई है।

''मैं तुम्हारे खेत में तुम्हारे साथ रहता हूं जब तुम किसी बडे या छोटे कारखाने में कभी काम करते हो ....
....
मै तुमसे, तुम्ही से बात किया करता हूं और यह बात मेरी कविता है।'

त्रिलोचन जी प्रगतिवाद के तीन स्तम्भों में से एक माने जाते है। प्रगतिवाद का अर्थ– ''समाज, साहित्य आदि की निरन्तर उन्नति पर जोर देने का सिद्धान्त।'' ऐसी ही सोच को आगे बढाने का कार्य

त्रिलोचन जी ने किया इसी कारण इनका नाम प्रगतिवादी चेतना के कवि के रूप में जाना जाता है। शोषितों की आवाज बन कर त्रिलोचन जी ने एक नई उम्मीद को उजागर किया इनकी सही सोच आगे चल कर मार्क्सवादी विचारधारा से ओत –प्रोत बनी।

प्रगतिवादी विचारधारा सौन्दर्य को रूमानी कल्पनाओं के बजाय जीवन से जोड़कर देखती है। वह अपने आस–पास के जनजीवन में सौन्दर्य खोजती है। सौन्दर्य व्यक्ति के हार्दिक आवेगों और मानसिक चेतना दोनों से संबधित होता है। प्रगति वादी साहित्य जनजीवन में सौन्दर्य की खोज करते हुए सोदेश्यता तथा साहित्य की वस्तु के अनुरूप कलात्मक सौन्दर्य को महत्व देता है अतः उसकी भाषा काचन जनजीवन के माध्यम से होता है।

'' नई चेतना के मुझ को बाण अनोखे सीधे लगे मर्म में आकर चोखे –चोखें।''

त्रिलोचन की कविता हमारे समाने एक सवाल अजागर करती है कि किस समय किस तरह की कविता की जाए जो जनता की चेतना उनकी अनुभूति, कल्पना, सोच को एक खास ढांचे में ढालने की कोशिश कर सकें। इनका काव्य –स्वर चेतना के अन्तर्विरोधों से कपकपाता हुआ निश्यच और अनिश्चय के बीच झूलता डगमगाता स्वर नही है बल्कि जन चेतना का स्वर है।

''लड़ता हूआ समाज नई आशा अभिलाषा, नए चित्र के साथ नई देता हूं भाषा।''

त्रिलोचन अद्‌भूत मलग कवि थे वे हदय हदय के बीच भावों के पुल बनाते थे। जीवन धर्मित को चरितार्थ करते है। प्रणय क चित्रपट रचने वाले त्रिलोचन किसी एक विचारधारा से नही बांधा जा सकता। ये कभी जन की आवाज थे तो कभी शोषितों का स्वर कभी हदय विदारक थे। त्रिलोचन ने बहुत से काव्य सग्रंह लिखे जिनमें –धरती, गुलाब और बुलबुल, ताप के ताए हुए दिन, शब्द, तुम्हे सौंपता हूं, फुल नाम है एक, सबका सपना आकाश, मेरा, घर, जीने की कला आदि।

'' मैने कब कहा था कविता की सांस, मेरी सांस है, जानता हूं मेरी सांस, टूटेगी और यह दुनिया दिन रात चहता हूं एक दिन छुटेगी।''

कवि का जैसा स्वभाव था वैसा ही उनकी काव्य सजृनता था। उनके व्यक्तित्व की पारदर्शिता आत्मस्पष्टीकरण के अवसरों को काव्य में जगह देती है। कवि कर्म भावनओं के उद्वेग का नाम है, यह बात कवि के यहां लागू नही होती यूं तो कवि के लिए यह आवश्यक नही है कि आत्मस्पष्टीकरण दे ना ही पाठक का अधिकार है कि वह कवि से अपेक्षा भाव रखे। यदि कोई कवि भूमिका को ध्यान में रखगर काव्य सजृन करता है तो उसका मर्म अधिक स्पष्ट होता है। शास्त्री जी महज लिखते नही थे बल्कि पाठकों के पढन के लिए कवि कर्म में जुटे रहते थे। त्रिलोचन जी संघर्षो के कवि थे।

कवि समाज के विचार व पुस्तकों के अध्ययन से उनके विचारों को और भी अधिक आत्मबल प्राप्त हुए और तब वह कवि समाज के परिदृश्य से टकराकर नए विचारों के साथ दिखाई दिया। सामाजिक चेतना के स्वर विविध आकारों को लेकर इनके काव्य में प्रकट होता है। वह साधारण प्रवृति के कवि होने के कारण अपनी रचनाओं के नाम भी उसी अनुभूति से देते थे।

''नहीं मै किसी का भी प्रिय कवि मैं, जरा देर से ही सही मुझे ये ज्ञात हुआ।
आज मै कृतज्ञ हूं जाने अनजाने हर किसी का और यह हर किसी का व्यूह मुझे त्रासदा नही है
एक – एक को मैं अलगाता हूं पास चला।''

अपने जीवन के भरे पूरे दशकों में त्रिलोचन जी ने आलोचनाओं की तरफ पीठ करके भी नही देखा।

एक कविभर का सांस संघर्ष सारी विषमता सारी दोगली परिस्थितियों की पीड़ा स्वंय जबरदस्त ढंग से झेलते है तब उसकी कविता बनती है। समाज का दर्द आम जन की पीड़ा उसके काव्य में दिखाई देती है एक कवि समाज, घर परिवार में रहकर भी दूर रहता है, क्योकि वह सोच में मग्न होता है। त्रिलोचन का काव्य सृजन कवि आत्मा में जनवाद की ओर जाता है। उसका आत्म सचेतन व संघर्षरत है तो उसके पीछे जनवादी चेतना के उत्तरदायित्व का वह वाहक है। प्रत्येक स्तर का स्तर शास्त्री जी के काव्य में प्राप्त होता है। विचारों की लडाई आधुनिकता का बोध उनको सत्य की खोज करनी पडी, भवाना के तहत वह सत्य नही आया है। हमारे कवि स्वाभिमानी कवि थे जितना मिला और जैसे मिला उसी में स्वंय को संतुष्ट रखा। ये बडे अक्खड स्थिर चित वाले मस्तमौला कवि थे। त्रिलोचन जी ने अपने जीवन में कई नौकरी की मगर थोडे दिन करके छोड़ देते थे। कभी नौकरी मिल जाती कभी छूट जाती इसी तहर जीवन में अस्त व्यस्त रहे।

त्रिलोचन जी हिन्दी साहित्य के ही नही वरन विश्व साहित्य के लिए एक नई दृष्टि लेकर आए। उन्होने मानव को नई ऊर्जा देने का अनोखा प्रयास किया। इन्होने जीवन प्रयन्त लेखन कार्य किया कई संग्रह व रचनाए लिखी जो एक नई ताजगी से ओतप्रोत है। संघर्षी जीवन जीने के बाद भी इन्होने संघर्ष को अपने ऊपर हावी नही होने दिया। जीवन की इस लम्बी यात्रा में स्वच्छन्द जीवन को अपनी खुली ऑखों से लगातार देख भोगा है। वे हिन्दी समाज के लगभग सभी समूहों में वास करते, दर–ब–दर की खाक छानते हुए कविता को परिष्कृत करते रहे। इस लम्बी यात्रा में त्रिलोचन की जिंदगी हमेशा कौतूहल एक विस्मय बनी रही। ये एकमात्र ऐसे कवि थे जो स्वंय को सौन्दर्य की अन्तः गरिमा के साथ लोक जीवन से पूरी तरह जुडे रहे।

त्रिलोचन ने अपनी काव्यकृतियों में ग्रामीण व किसान मजदूरों के संघर्षों को बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। किसान जीवन की दयनीता से द्रवित होकर उसकी व्यथा कथा कहते है। या किसान जीवन की सादगी माटी की सुंगध को यथार्थ रूप से चित्रित करते है।

'' मिलकर वे दोनों प्राणी दे रहे खेत में पानी, मुझे जगत जीवन का प्रेमी बना रहा है
प्रेम तुम्हारा।''

त्रिलोचन का काव्य स्वर चेतना के अन्तर्विरोधों से कॅपकपांता हुआ निश्चय और अनिश्चय के बीच झूलता डगमग स्वर नहीं है। रचनात्मक तनाव में इस काव्य– स्वर के पीछे कार्यरत सांस बहुत दूर तक खिची रहती है। कवि का अपने उपर अद्‌भुत नियन्त्रण है। उसकी रचनात्मक ऊर्जा अभिव्यक्ति के चौखटे को तोड़कर मुक्त नही बहने पाती। त्रिलोचन अनुभूति का पका हुआ रूप रखते है शान्त और ओजपूर्ण जिसकी सह–अनुभूति क्षुब्ध संवेगों के घात –प्रतिघात के स्वंर पर नही, विवेकयुक्त अन्तर्दृष्टि के स्तर पर की जा सकती है। कल त्रिलोचन के लिए एक आईना है जिसमें वे अपनी और दूसरों की अनुभूतियों के मर्म को सजीव रखतें है। त्रिलोचन घटनाओं के कवि है जो घटना घटी उसी पर रचना लिखी। घटनाओं की कविता हमारे सामने की वास्ताविकता का बोध कराती है। इसी कारण वे जल्दी मन को छू जाती है।

'' शब्दों से काम नही चलता जीवन को देखा है
यहॉ कुछ और वहॉ कुछ ओर
इसी तरह यहॉ वहॉ हरदम कुछ और
कोई एक ढंग सा काम नी करता।''

ऐतिहासिक काव्यभाषिक मजबूरी यह भी नही कहा जा सकता कि वे समानांतर अनूभुतियों के ग्राही है क्योंकि समानातंर किसी वैचारिक था चिंतनपरक सवांद की आधारशीला तो हो सकती है पर उसकी आंतरिक बनावट नही हो सकती त्रिलोचन में एक तरह की मिलावट है जो दर्शन, मूल्य है यह जैसे ही कविता के बीच, एक समीकरण की तरह घुल जाते है। प्रत्येक कविता का स्वंर संतुलित, शांत होते हुए भी ऐन्द्रिक रांग से लडाई लड़ता सा लगता है। त्रिलोचन ने सीधे स्तर पर बुनियादी लोक धर्म और अवसन्न जनादर्शन को प्रभावित किया। वे अपनी आस –पास की प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करते है, उनकी बारीक गतिविधियों का अवगाहन करत है और सादी भाषा की लडियों में माला की तरह पिरोकर कविता की सुन्दर माला रच देते है।

''उस दिन चम्पा आई मेने कहा कि चम्पा, तुम भी पढ लो

हारे गाढे काम सरेगा। गॉधी बाबा की इच्छा है

सब जन पढ़ना लिखना सीखे चम्पा ने कहा कि

मै तो नही पढ़ूँगी।''

इस रचना से स्पष्ट है कि बात –बात पर लिखना त्रिलोचन का गुण है जो उनकी सृजन कला को शिखर तक पहुॅचाते है। दूसरे शब्दों में अनुभवों का सादा ब्यान हैं। जिसमें व्यवस्थित शब्दों का मिश्रण किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उस जनपद का कवि हूँ– त्रिलोचन शास्त्री पृ0–93
2. शब्द –त्रिलोचन – पृ0–6
3. दिगन्त– त्रिलोचन शास्त्री पृ0–26
4. ध्वनि ग्राह दिंगत– त्रिलोचन शास्त्री– पृ0–22
5. धरती– चिलोचन –पृ0– 65
6. त्रिलोचन संचयिता– पृ0–20
7. ताप के तार हुए दिन– त्रिलोचन शास्त्री– पृ0–15
8. तुम्हें सोचता हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 83
9. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 96
10. धरती, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 27
11. फूल नाम है एक, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 71
12. धरती, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 25
13. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 87
14. त्रिलोचन के बारे में, रामविलास शर्मा का लेख, त्रिलोचनः आधुनिक और परंपरा बोध, पृ. 55.